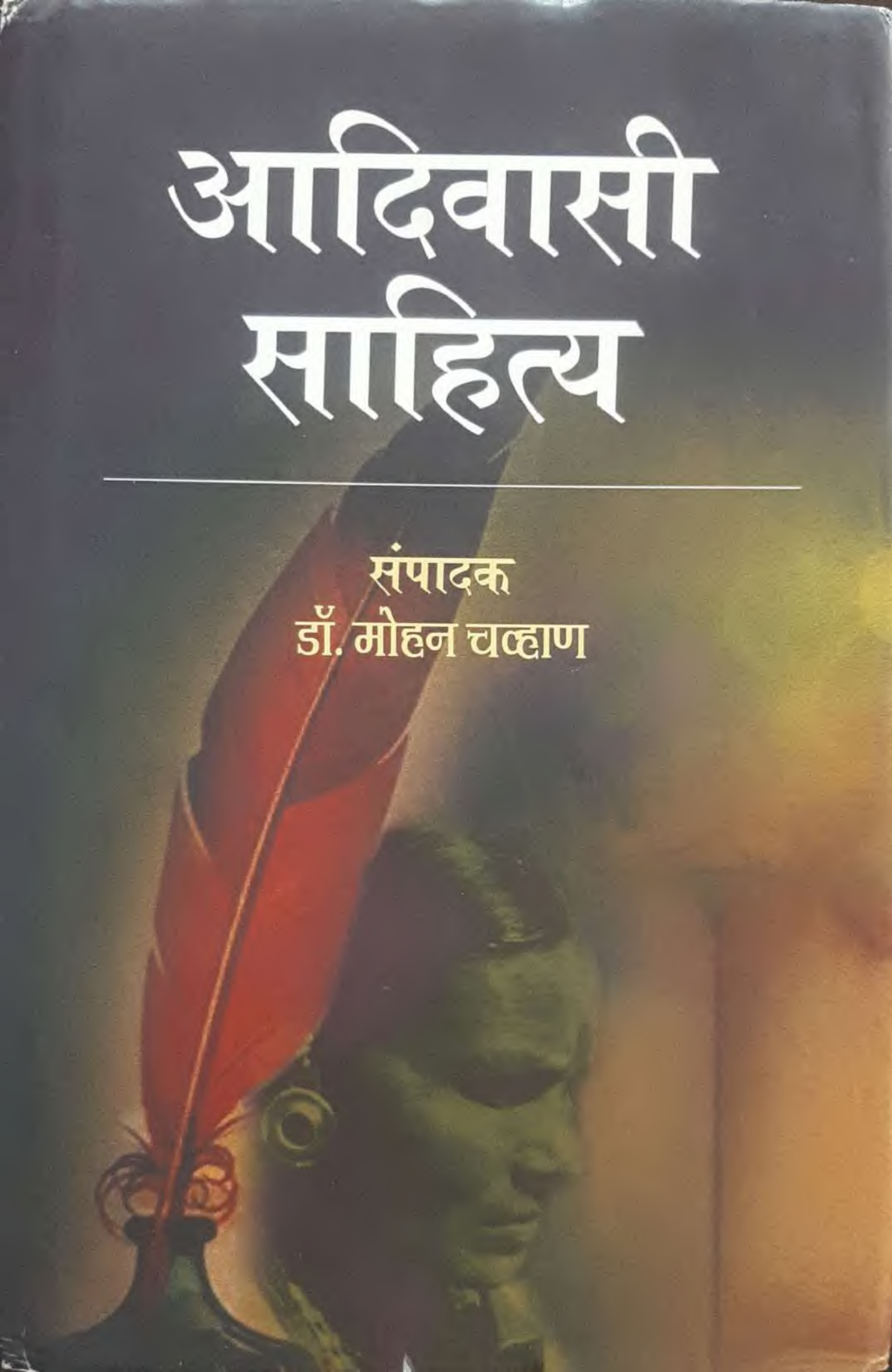


# आदिवासी साहित्य

---

संपादक  
डॉ. मोहन चव्हाण





वैधानिक चेतावनी  
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2020

ISBN 978-93-89341-16-4

प्रकाशक

**अनुज्ञा बुक्स**

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : [anuugyabooks@gmail.com](mailto:anuugyabooks@gmail.com) • [salesanuugyabooks@gmail.com](mailto:salesanuugyabooks@gmail.com)

फोन : 011-22825424, 09350809192

www : [anuugyabooks.com](http://anuugyabooks.com)

मूल्य : 500 रुपये

आवरण

मीना-किशन सिंह

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

AADIVASI SAHITYA

*Adivasi Discourse edited by Dr. Mohan Chauhan*

8 आदिवासी साहित्य

14. हिन्दी काव्य में आदिवासी शबरी का चरित्रांकन 79  
डॉ. क्री.डी. सूर्यवंशी
15. मैत्रेयी पुष्पा के अल्मा कवृत्तरी उपन्यास में आदिवासी जन-जीवन 83  
डॉ. जालिंधर इंगले
16. आदिवासी-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में : नंदुरबार जिले का 88  
आदिवासी समाज एवं उनकी संस्कृति  
प्रा. डॉ. चंद्रभान सुरवाडे
17. हिन्दी काव्य में आदिवासी-विमर्श 94  
प्रा. रविन्द्र पुंजाराम ठाकरे
18. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी-विमर्श 99  
प्रा. दीपक विनायकराव पवार
19. स्वदेश दीपक के नाटकों में आदिवासी विचार 107  
गाडीलोहार बन्सीलाल हेमलाल
20. हिन्दी कथा-साहित्य में आदिवासी-विमर्श 112  
प्रा. ललिता भाऊसाहेब घोडके
21. महाराष्ट्र के आदिवासी पारधी समाज के सामाजिकता का चित्रण 117  
रेखा महादेव भांगे
22. 1960 दशक के आदिवासी जीवन केन्द्रित हिन्दी उपन्यास : 120  
सामान्य परिचय  
प्रा. बापु नानासाहेब शेळके
23. हिन्दी काव्य में चित्रित आदिवासी-विमर्श 127  
देवानन्द यादव
24. आदिवासी मनुष्य नहीं है? 132  
रेवनसिद्ध काशिनाथ चव्हाण
25. अरण्य में सूरज : आदिवासी-विमर्श 136  
सविता सीताराम तोड़मल
26. हिन्दी उपन्यास में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन-संघर्ष 140  
वाडेकर रामेश्वर महादेव, वाघमारे विकास सूर्यकांत
27. हिन्दी कथा-साहित्य में आदिवासी-विमर्श 143  
मोनिका कुमारी
28. हिन्दी साहित्य में आदिवासी विमर्श 147  
प्रा. डॉ. आनंद जी. खरात  
रचनाकारों के बारे में 151

## हिन्दी साहित्य में आदिवासी विमर्श

प्रा. डॉ. आनंद जी. खरात

भारत की बात करें तो 7.5 प्रतिशत से भी अधिक लोग आदिवासी जाती में आते हैं! 'आदिवासी' शब्द में ही इसका अर्थ छिपा हुआ है। 'आदि' का अर्थ है पहले से, प्रथम, आरंभिक या प्राचिन तथा 'वासी' का अर्थ होता है वास करनेवाले या निवासी या प्रथम निवासी। इस तरह मूल निवासी या पृथ्वी पर सर्व प्रथम निवास, करने वाले लोगों को आदिवासी कहा जाता है।

आज आदिवासी शब्दके उच्चारण से ही हमारे सामने प्रश्न? खड़ा हो जाता है—प्रत्येक सदी से छला और सताया गया, नंगा किया और एक सोची-समझी साजिश के द्वारा वनों-जंगलों में जबरन भगाया गया एक असंघटित मनुष्य, जो अपनी स्वतंत्र रूढ़ी-परम्परा सहित अनादी काल से गाँव देहातों से दूर घने जंगलों में रहनेवाला संदर्भहीन मनुष्य है। यह मनुष्य अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को अपनी जान की कीमत देकर संजोता आ रहा है। प्रकृति प्रिय और प्रकृति पर निर्भर यह मनुष्य आज भी कई जगह पर भक्ष्य की खोज में भटकता है। नित्य कर्तव्यशील यह मनुष्य वर्तमान में कुछ लाचार दिखाई देता है। अन्याय ग्रस्त यह आदमी पशुवत जीवन जी रहा है।

मध्य प्रदेश का एक भू-क्षेत्र जिसे 'पातालकोट' कहते हैं। 'पातालकोट' चारों ओर से पर्वत माला से घिरा करीब दो-ढाई किलोमीटर नीचे ढलान पर है। उसे देखकर यह विश्वास नहीं होता कि, हम इक्कीसवीं सदी में हैं। वहाँ कई गुफाएँ ऐसी हैं जहाँ सूर्य प्रकाश भी नहीं पहुँचता। उनकी जरूरत है नमक। नमक के बदले अनेक वन्य औषधियों या फल वे दे जाते हैं। वृक्षों की जड़े और टहनियाँ उनके लिए रास्ते का काम करती हैं।

डॉ. विनायक तुमराम के शब्दों में वर्तमान स्थिति में 'आदिवासी' शब्द का प्रयोग विशिष्ट पर्यावरण में रहनेवाले, विशिष्ट भाषा बोलनेवाले, विशिष्ट जीवन पद्धति तथा परम्पराओं से सजे और सदियों से जंगल-पहाड़ों में जीवन-

**CBCS**  
**PATTERN**

Also Available in  
**e-Book**

KAVAYITRI BAHINABAI CHAUDHARI  
NORTH MAHARASHTRA UNIVERSITY

**T.Y.B.Sc. • SEM V • ZOO 506 (B)**

# **AQUARIUM FISH KEEPING**

Prof. S. S. Patole

Dr. V. R. Borane

Dr. R. K. Petare



**ZOOLOGY**



**Prashant  
Publications**

© Reserved

# **AQUARIUM FISH KEEPING**

**T.Y.B.Sc. (CBCS) | ZOO-506 (B) | Sem V**

## **Publisher and Printer**

Prashant Publications  
3, Pratap Nagar, Shri Sant Dnyaneshwar Mandir Road,  
Near Nutan Maratha College, Jalgaon 425001.

## **• Phone • Website • E-mail**

(0257) 2235520, 2232800  
www.prashantpublications.com  
prashantpublication.jal@gmail.com

## **• First Edition • ISBN • Type Setting**

October, 2020  
978-93-90483-05-1  
Prashant Publication

**Price : ₹ 75/-**

*e-Books are available online at [www.prashantpublications.com](http://www.prashantpublications.com)*

**DOWNLOAD** Prashant Publications app for e-Books  
[kopykitab.com](http://kopykitab.com) • [amazon.com](http://amazon.com) • [play.google.com](http://play.google.com)

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying (xerox copy), recording or otherwise, without the prior permission.

**CBCS  
PATTERN**

Also Available in  
**e-Book**

KAVAYITRI BAHINABAI CHAUDHARI  
NORTH MAHARASHTRA UNIVERSITY

**T.Y.B.Sc. • SEM V • ZOO 503**

# MAMMALIAN HISTOLOGY

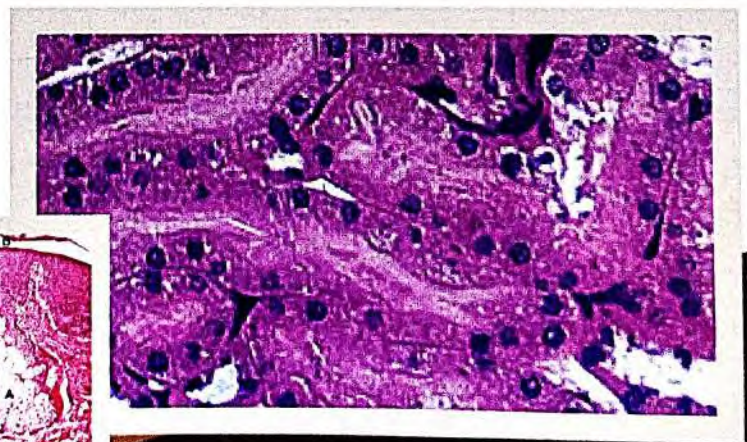
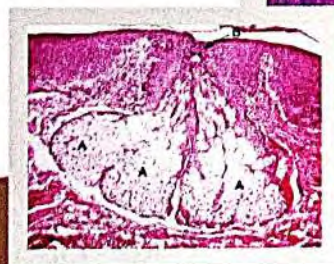
Prof. A. T. Kalse

Dr. Y. M. Nandre

Dr. L. B. Pawar

Dr. Namrata G. Mahajan

Dr. Manojkumar Z. Chopda



**ZOOLOGY**



**Prashant  
Publications**

© Reserved

# **MAMMALIAN HISTOLOGY**

**T.Y.B.Sc. (CBCS) | ZOO-503 | Sem V**

## **Publisher and Printer**

Prashant Publications

3, Pratap Nagar, Shri Sant Dnyaneshwar Mandir Road,  
Near Nutan Maratha College, Jalgaon 425001.

## **• Phone • Website • E-mail**

(0257) 2235520, 2232800

[www.prashantpublications.com](http://www.prashantpublications.com)

[prashantpublication.jal@gmail.com](mailto:prashantpublication.jal@gmail.com)

## **• First Edition • ISBN • Type Setting**

October, 2020

978-93-90483-04-4

Prashant Publication

**Price : ₹ 120/-**

*e-Books are available online at [www.prashantpublications.com](http://www.prashantpublications.com)*

**DOWNLOAD** Prashant Publications app for e-Books

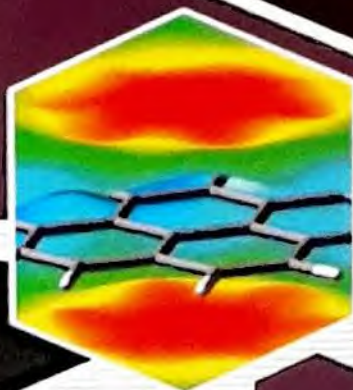
[kopykitab.com](http://kopykitab.com) • [amazon.com](http://amazon.com) • [play.google.com](http://play.google.com)

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying (xerox copy), recording or otherwise, without the prior permission.



# GENERAL CHEMISTRY

Dr. W. B. Shirsath



# **General Chemistry**

**First Edition: 19<sup>th</sup> February 2021**

© All rights reserved:

All rights are reserved. No part(s) of this publication may be reproduced or distributed in any form or by any means or stored in a database retrieval system without the prior written permission of the publisher.

**ISBN: 978-93-88834-60-5**

**Published By:**

**Kumud Publications**

Gat No. 16, Plot No.10, Shiratna Colony,  
Pimprala Parisar, Jalgaon - 425001

**Contact:** 9405206230, 9923374822

**Email :** kumudpublications@gmail.com

**Website :** www.atharvpublications.com

Type Setting

**Kumud Publications**

**Price: 950/-**

महामानव  
डॉ. बाबासाहेब  
साहेबकर

संपादक  
डॉ. कपिल राजहंस



महामानव डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर  
डॉ. कपिल राजहंस

प्रकाशक

डॉ. कपिल राजहंस/प्रा. मिनल राजहंस  
श्रावस्ती प्रकाशन

८७३, क/२, सी वॉर्ड, सिध्दीश्री प्लाज़ा,

राजाराम रोड, कोल्हापूर - ४१६००२

मो. ७०२८५८२७६१, ८८०६९८०१८७

Email : shravastiprakashan@gmail.com

मुखपृष्ठ - गंगाधर म्हमाने

प्रथमावृत्ती - १४ एप्रिल, २०२१

मुद्रक - मिरर प्रिटींग प्रेस, कोल्हापूर

**ISBN : 978-81-921784-90-5**

किंमत : रु. २५०/-

७. समाजशास्त्रज्ञ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर / ५१  
प्रा. अश्विनी सुरेश गाथकवाड
८. स्त्री मुक्ती आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर / ५६  
डॉ. कोळसेकर मनोहर सुबराव
९. स्त्री-पुरुष समतेचे पुरस्कर्ते डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर / ६१  
कु. शुभांगी भिमराव तायडे
१०. स्त्री-पुरुष समतेचे पुरस्कर्ते : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर / ६५  
प्रा. डॉ. विनोद गणपतराव जगतकर
११. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर - मजूरमंत्री / ७१  
डॉ. राजेश बापुराव हुमणे
१२. स्त्री-पुरुष समतेचे पुरस्कर्ते : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर / ७९  
प्रा. डॉ. सतीश मस्के
१३. सामाजिक आंदोलने आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर / ८५  
देवकुमार तुकाराम मेश्राम
१४. कृषी तज्ञ-डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर / ९३  
प्रा. डॉ. राजेंद्र आत्माराम मुंढरकर
१५. धर्मशास्त्राचे अभ्यासक डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर / १०१  
निलेशकुमार रामभाऊजी इंगोले

## स्त्री-पुरुष समतेचे पुरस्कर्ते : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

प्रा. डॉ. सतीश शस्के

कर्म. आ. मा. पाटील वरिष्ठ महाविद्यालय, पिंपळनेर, ता. साक्री, जि. धुळे  
१४२३३९७४८४

भारतीय संस्कृती ही पुरुषप्रधान संस्कृती आहे. या संस्कृतीत धर्माने स्त्रियांपेक्षा पुरुषांलाच अधिकार देऊन स्त्री यांना मात्र दुय्यम स्थान दिले होते. मुलामीच्या वेडीने स्त्रिला करकचून आवळून टाकले आहे. धर्माने घालून दिलेल्या नियमाप्रमाणे, आज्ञेप्रमाणे समाजातील स्त्रियांना कोणत्याच प्रकारचे स्वातंत्र्य नाही. बूल आणि मूल पंचनेच तिचे कार्य होते. लहानपणी वडिलांनी, तरुणपणी पतीने आणि व्हातारपणी मुलांनी तिचे रक्षण करायचे असा दंडुका होता. स्त्रियाही हे सार अंगदी निमुटपणे सहन करायच्या त्या नियमाचे पालन करायच्या. मनुस्मृतीनेही स्त्रियांना मानवी हक्कांपासून व शिक्षणापासून वंचित ठेवल्यामुळे त्यांचा मानसिक, शारीरिक, आर्थिक बाजूने छळ केला जायचा. याविषयी यशवंत मनोहर म्हणतात की, स्त्री ही माणूस आहे. ती मानवी समाजाचा अविभाज्य असा घटक आहे. या घटकाची दुर्दशा करून कोणत्याही मानवी समाजाला स्वतःला सुसंस्कृत शाबित करता येत नाही. स्वतःचे अर्धांग तुळे करून कोणत्याही समाजाला आपला निरोगीपणा सिद्ध करता येत नाही. स्त्रीला तो समाज काय मानतो, तिला कसे आणि कोणते स्थान देतो या प्रश्नांच्या उत्तरावरून त्या त्या समाजाचा दर्जा आणि मानवी समाज म्हणून त्याची मूल्यवत्ता ठरविता येते. स्त्रिला केवळ भोगदासी करून ठेवणारा, तिला केवळ जातीची निर्धिति करणारी करणारी यंत्रणा म्हणून राबवणारा आणि तिला ज्ञानबंदी करून माणुसकीच्या पूर्ण आविष्काराकडे जाणाऱ्या तिच्या वाटा बंद करून टाकणारा समाज मानवी समाज म्हणवून घेण्याची लायकी गमावून बसत असतो. त्या समाजाची संस्कृती प्रश्नार्थक होऊन जाते. त्यामुळे स्त्रियांच्या जीवनात कुठलीच प्रगती दिसून येत नव्हती. पशुपेक्षाही हीन जीवन स्त्रियांच्या वाट्याला आले होते. हे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी ओळखले होते. स्त्रियांची उन्नती व्हावी यासाठी त्यांनी प्रयत्न केले आहेत. समाजाचा अर्धा भाग स्त्री आहे. पुरुषांप्रमाणेच ती समाजाचा महत्त्वाचा घटक आहे. तिचा विकास